IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कौटिल्य के आर्थिक विचारों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता

डॉ. प्रकाश सीरवी

सह आचार्य अर्थशास्त्र

एस.पी.सी. राजकीय महाविद्यालय

अजमेर (राजस्थान)

सारांश :–

चाणक्य, जिन्हें कौटिल्य भी कहा जाता है, एक प्राचीन भारतीय विचारक और अर्थशास्त्री थे। आचार्य कौटिल्य अर्थशास्त्र के प्रणेता माने गये हैं। कौटिल्य ने आर्थिक नियमों के प्रतिपादन में जिन तर्कों का प्रयोग व उल्लेख किया है, वे आज की परिस्थितियों में भी लागू किए जा सकते हैं। चाणक्य ने अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में कुछ आधारभूत सिद्धान्त प्रतिफलित भी किए। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में आर्थिक संगठन, वित्तीय प्रबंधन, और व्यापार के माध्यम से देश की समृद्धि बढ़ाने के उपायों पर विचार किया है। और धार्मिक व नैतिक मूल्यों को भी महत्व दिया है। उन्होंने विदेश नीति के क्षेत्र में भी विचार दिए हैं। सबसे महत्वपूर्ण कौटिल्य ने अर्थशास्त्र व मूलभूत आर्थिक क्रियाओं को भी नैतिकता पर आधारित करके उनके महत्व को बताया। वर्तमान में इसी प्रकार के विचारों का अस्तित्व स्वीकार करके हम अपने देश को आर्थिक विकास के पथ पर आगे बढ़ा सकते हैं। कौटिल्य के आर्थिक विचार, समृद्धि, सुरक्षा और समाज की सामाजिक व आर्थिक कल्याण पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

संकेत शब्द :– अर्थशास्त्र, नैतिकता, बाजार संगठन, आर्थिक क्रियाएँ, प्रासंगिकता।

प्रस्तावना :–

कौटिल्य ने उत्पादन को अर्थव्यवस्था में सर्वप्रथम स्थान प्रदान किया है। उनके अनुसार आर्थिक प्रगति का मुख्य स्त्रोत उत्पादन वृद्धि ही है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र ग्रन्थ में राज्य के हितों को वरियता अवश्य दी, पर इस बात को भी स्पष्ट किया कि राज्य की शक्ति भी अर्थव्यवस्था के उत्पादन की मात्रा पर निर्भर रहती है। कौटिल्य की दृष्टि में भूमि, जनसंख्या, एवं पूंजी ये सभी उत्पादन के प्रमुख साधन होने के साथ ही आर्थिक

प्रगति के भी प्रमुख कारक हैं। इन सभी की उपलब्धि वृद्धि एवं उपयोग के सम्बन्ध में कौटिल्य ने व्यवस्थाएँ प्रतिपादित की हैं। कौटिल्य के अनुसार अर्थव्यवस्था ही राष्ट्र का मेरूदण्ड है। राजनीतिक व सामरिक दृष्टि से शक्तिशाली होना किसी भी राष्ट्र के लिए आवश्यक है, परन्तु कौटिल्य के अनुसार इसके लिए आर्थिक रूप से सम्पन्न होना अति आवश्यक है। उन्होंने आर्थिक व्यवहार के विश्लेषण तथा उससे सम्बन्धित नीति को आदर्शवाद से हटाकर भौतिकवाद की आधारशिला पर रखा। वर्तमान युग भी भौतिकवाद को अधिक महत्व देता है। कौटिल्य की आर्थिक अवधारणा में राज्य की प्रभुता संरक्षण एवं सर्वव्यापी हस्तक्षेप की नीति अपनायी गई है। वे अर्थव्यवस्था को सुसंगठित और केन्द्रीकृत करना चाहते थे।

साहित्य समीक्षा :–

जैन डॉ. रेनू (2020) ने अपने लेख "कौटिल्य के आर्थिक विचार–वर्तमान संदर्भ में" बताया कि इस प्रकार का अध्ययन निश्चित रूप से हमारे भूतकाल के सम्बन्ध में व्याप्त भ्रम, कि प्राचीन भारत में आर्थिक विकासशीलता का अभाव था को दूर करेगा। और यह भी बताया कि कौटिल्य के अनुसार जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ और काम है।

सिंह प्रियंका (2003) ने अपने शोध ग्रन्थ "कौटिल्य के आर्थिक विचार" में बताया कि कौटिल्य के आर्थिक विचार का रेखांकन करने से पूर्व यह अति आवश्यक हो जाता है कि हम उन भ्रांतियों का निराकरण कर लें जो अर्थशास्त्र के रचयिता तथा तिथि के विषय में विद्वानों के बीच विवाद का कारण बना है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में धार्मिक तथा पूर्णतः ब्राह्मणवादी परम्परा में लिखे गये ग्रन्थों से भिन्न परम्परा प्रस्तुत की है।

उद्देश्य :–

इस शोध पत्र का उद्देश्य कौटिल्य के आर्थिक विचारों को व्यवहार में परिलक्षित करना है। कौटिल्य का मुख्य उद्देश्य भौतिकतावाद को बढ़ावा देना है वे इसीलिए उत्पादन को अर्थव्यवस्था में प्रथम स्थान देते हैं और आर्थिक प्रगति को उत्पादन वृद्धि से मापते हैं। लेख के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं :–

- कौटिल्य के आर्थिक विचारों का अध्ययन
- कौटिल्य के अनुसार आर्थिक प्रगति के माप का अध्ययन
- कौटिल्य के आर्थिक विचारों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता का अध्ययन

कौटिल्य के आर्थिक विचारों का महत्व :–

कौटिल्य के आर्थिक विचारों का महत्व इसलिए अत्यधिक हो जाता है क्योंकि उन्होंने विभिन्न आर्थिक मुद्दों पर अद्वितीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किए थे जो आज भी उपयोगी हैं। कौटिल्य के आर्थिक विचार देश की आर्थिक समृद्धि को प्राथमिकता देते हैं उन्होंने व्यापार, वित्त और निवेश के माध्यम से समृद्धि को बढ़ाने के उपाय सुझाये थे। जिनका महत्व आज भी है। कौटिल्य ने आर्थिक विकास को राजनीतिक संरचना के साथ जोड़ा। उनके विचार से स्पष्ट होता है कि आर्थिक सुरक्षा और समृद्धि के लिए स्थिर और सुरक्षित राजनीतिक परिप्रेक्ष्य महत्वपूर्ण है। कौटिल्य ने व्यापार, वित्त और निवेश के माध्यम से आर्थिक समृद्धि को प्रमोट करने के उपाय आज भी व्यापारिक सम्बन्धों के प्रबन्धन में महत्वपूर्ण है। उन्होंने सामाजिक न्याय की रक्षा करने का कर्तव्य समझाया और आर्थिक क्रियाकलापों में भी धर्म और नैतिकता का महत्व बताया। उनके अनुसार, सही नैतिक मूल्यों का पालन करने से ही आर्थिक समृद्धि सुरक्षित और दुरूस्त रह सकती है। कौटिल्य के आर्थिक विचार हमें समृद्धि के मार्ग पर चलने के उपायों का अध्ययन करने का अवसर प्रदान करते हैं।

कौटिल्य के आर्थिक विचार :–

कौटिल्य का अर्थशास्त्र :–

कौटिल्य अर्थशास्त्र प्राचीन भारत की हिन्दू राजनीति का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। इसमें मुख्य रूप से राजाओं को उपदेश दिए गए हैं। कोई भी राजा कौटिल्य के सिद्धान्तों को अपनाकर एक सर्व शक्तिशाली, सुख समृद्धि से परिपूर्ण एवं शान्तिमय राज्य की स्थापना कर सकता है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में सर्वप्रथम अर्थ प्रदान विचारों का प्रतिपादन किया। उन्होंने तीन अलौकिक उद्देश्यों में से अर्थ को प्रथम एवं महत्वपूर्ण स्थान दिया है। अर्थशास्त्र को पुरातन नीति, धर्म एवं परम्पराओं के बंधन से मुक्त कर भौतिकवाद की वास्तविक अलौकिक धरती पर लाकर रखा है, इस प्रकार अर्थशास्त्र वैज्ञानिक अध्ययन का एक अंग हो गया है। कौटिल्य के मत से धन एवं अर्थ सर्वोपरि है और इसी का अध्ययन अर्थशास्त्र है। अर्थशास्त्र वार्ता, दण्डनीति, प्रशासन एवं राज्यशास्त्र का समन्वय है। अतः कौटिल्य का अर्थशास्त्र का अध्ययन व्यवहारिक जीवन के कर्तव्यों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

कृषि :–

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में कृषि को विशेष स्थान प्रदान किया है। कृषि में अधिकाधिक उत्पादन को प्रोत्साहित किया। कृषि राज्य की आय का प्रमुख स्त्रोत थी। आज हमारे देश में जो कृषि सुधार कार्यक्रम अपनाये जा रहे हैं वे लगभग उसी रूप में हैं जिस रूप में हजारों वर्ष पूर्व कौटिल्य ने प्रस्तुत किए थे।

कौटिल्य ने कृषि व्यवसाय को सर्वोच्च स्थान दिया है। कौटिल्य ने कृषि करने का अधिकार ब्राह्मण, वैश्य व शुद्रों को प्रदान किया। कृषि कार्य को विकसित करने के लिए अच्छे खाद व बीज, बाँधों व नहरों आदि की व्यवस्था करने की बात कही है। कौटिल्य ने कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए वर्षा के अतिरिक्त तालाब, कुएँ व नहरों के द्वारा सिंचाई करने की बात कही है। कौटिल्य ने कृषि के सहायक व्यवसाय के रूप में पशुपालन की बात की है।

व्यापार व वाणिज्य :–

कौटिल्य ने सोने के व्यापार को प्रमुखता दी है। इसके साथ ही राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारी, व्यापारिक मार्गों तथा तत्सम्बन्धी नियमों को प्रतिपादित किया। कौटिल्य ने इस बात का सुझाव दिया कि बाहर से आने वाली वस्तुओं पर कर लगाये जायें क्योंकि इससे सरकारी कोष में वृद्धि होगी व बाहर से आने वाली वस्तुओं का आयात को कम किया जाए तथा आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन देश में ही किया जाए। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में राज्य व्यापार को प्रधानता दी है। कौटिल्य के अनुसार आर्थिक प्रगति का मुख्य स्त्रोत उत्पादन वृद्धि ही है। व्यवसायियों को पूर्ण संरक्षण प्राप्त था। कौटिल्य ने श्रमिकों व मजदूरों के कल्याण के लिए नियम बनाए थे उन नियमों से आधुनिक श्रमिक कल्याण के नियम भी पीछे रह जाते हैं। वे श्रमिकों के शोषण के विरूद्ध थे। कौटिल्य ने स्त्री श्रमिकों के उचित वेतन दिए जाने का उल्लेख किया है। कौटिल्य के समय भी श्रमिक संगठन हुआ करते थे।

राजस्व सम्बन्धी विचार :–

कौटिल्य राज्य को शक्तिशाली बनाना चाहते थे। राज्य तभी शक्तिशाली हो सकता है जब उनकी आय के साधनों में वृद्धि हो। कौटिल्य ने विशेषकर, उद्योग, वन, मछली पकड़ने, खान, भूमि व व्यापारियों पर कर लगाने की बात की है। इसके अतिरिक्त कौटिल्य ने आयात कर, चुंगी कर, सड़कों पर शुल्क को भी राज्य की आय के स्त्रोतों मे शामिल किया था। वर्तमान समय की तरह ही कौटिल्य ने विलासिता की वस्तुओं पर ऊंची दर से करारोपण की बात की है। कौटिल्य ने करारोपण में सुविधा व न्याय का ध्यान रखा।

जहाँ एक ओर कौटिल्य ने राजकीय आय के स्त्रोतों का उल्लेख किया वहीं दूसरी ओर सार्वजनिक व्यय का भी उल्लेख किया है। कौटिल्य ने सार्वजनिक व्यय में विशेष रूप से प्रशासनिक, सैन्य व कल्याणकारी व्यय को शामिल किया है। अतः राज्य की आय–व्यय के सम्बन्ध में राज्य की सत्ता के संरक्षण के सिद्धान्त का पालन किया जाता था।

आर्थिक प्रगति :–

आर्थिक क्षेत्र में उत्पादन एवं वितरण की समस्या ही प्रमुख है। कौटिल्य आर्थिक प्रगति का मुख्य स्त्रोत उत्पादन वृद्धि को ही मानते हैं। कौटिल्य के अनुसार राज्य की शक्ति अर्थव्यवस्था में उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करती है। कौटिल्य की दृष्टि में भूमि, जनसंख्या एवं पूँजी ये सभी उत्पादन के प्रमुख साधन होने के साथ ही आर्थिक प्रगति के भी प्रमुख कारक हैं। इन सभी की उपलब्धि, वृद्धि संरक्षण एवं उपयोग के सम्बन्ध में कौटिल्य ने व्यवस्थाएँ प्रतिपादित की। कौटिल्य ने कृषि के लिए भूमि व्यवस्था एवं सुधार पर सबसे अधिक ध्यान दिया क्योंकि भूमि राज्य की आय का बड़ा स्त्रोत थी। भूमि के साथ ही उस पर कार्य करने वाले श्रमिकों का भी यथार्थ रूप से उचित प्रकार का होना आवश्यक माना गया है। कौटिल्य जनसंख्या की वृद्धि के पक्ष में थे। कौटिल्य के अनुसार पूंजी का राज्य कार्य, निर्माण कार्य, व्यापार, कृषि सुधार आदि कार्यों में उत्पादन के एक साधन के रूप में बड़ा महत्व है। भूमि एवं कृषि का व्यवसाय ही मुख्यतः अतिरेक का उत्पादन माना गया है, जो पूँजी निर्माण का मुख्य साधन है।

मुद्रा व्यवस्था :–

कौटिल्य ने व्यापार की सुविधा के लिए उचित द्रव्य व्यवस्था एवं माप तौल की व्यवस्था की थी। कौटिल्य ने मुद्रा उसे माना जो द्रव्य विनिमय माध्यम व विधि ग्राह माध्यम का कार्य करे। कौटिल्य के समय प्रामाणिक सिक्का पण था, जिसको बनाने के लिए चारमाशा ताबा, एक माशा तीक्ष्ण, त्रपु–शीशा और शेष ग्यारह माशा चाँदी का योग आवश्यक था। कौटिल्य ने स्वर्ण विनियम को प्रमुखता दी। विनियम की सुविधा के लिए पण के अतिरिक्त छोटे सिक्के अर्धपण, पादपण, अष्ठभाग पण (दुअन्नी) का उल्लेख भी किया है। इसके अतिरिक्त माषक, अर्ध माषक नाम के सिक्कों का भी विधान था। अतः कौटिल्य ने जिस मुद्रा व्यवस्था का विधान बनाया है वह मितव्ययी, सुविधाजनक, सरल व लोचदार है। सिक्कों की ढलाई सरकार के द्वारा की जाती थी। वर्तमान समय में भी कौटिल्य की ही भांति मुद्रा व्यवस्था का ही विधान है।

कौटिल्य के आर्थिक विचारों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता :–

कौटिल्य अपने आर्थिक विचारों के आधार पर प्रथम अर्थशास्त्री कहे जा सकते हैं। इनके विचार आधुनिक व प्राचीन अर्थशास्त्रियों से काफी मेल खाते हैं और अधिकांश मत एवं सिद्धान्त आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रचलित है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र, कृषि, उत्पादन, व्यापार एवं प्रगति आदि विचारों में जिस आर्थिक व्यवस्था का चित्रण मिलता है वह वर्तमान भारत की मिश्रित अर्थव्यवस्था के काफी समीप है। वर्तमान युग में भौतिकतावाद पर ज्यादा जोर दिया जाता है। कौटिल्य ने हजारों वर्ष पूर्व ही आर्थिक विकास में भौतिकता को प्रधानता दी थी। यही नहीं कौटिल्य के आर्थिक विचार तो वर्तमान में जनमानस में पूर्ण रूप से

समाहित हैं। हमारे देश में कौटिल्य जैसे महान आर्थिक विचारक वर्तमान में नवाचारों को जन्म दे रहे हैं। कौटिल्य के अनुसार अर्थव्यवस्था राष्ट्र का मेरूदण्ड है।

कौटिल्य के विचार वर्तमान युग में भी महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक हैं क्योंकि वे आजकल के आर्थिक समृद्धि, विकास और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर प्रकाश डालते हैं। कौटिल्य ने व्यापार, वित्त और निवेश के माध्यम से आर्थिक समृद्धि को बढ़ाने के उपाय सुझाये थे जिनका आज भी महत्व है। कौटिल्य ने व्यापार को राजनीति से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित किया जो आजकल की विश्वव्यापी व्यापारिक सम्बन्धों में भी मान्यता प्राप्त है। कौटिल्य विज्ञान, प्रौद्योगिकी और शिक्षा के प्रति ध्यान देने की बात करते थे जो आजकल के विकास के लिए भी आवश्यक है।

कौटिल्य के आर्थिक विचार, समृद्धि, न्याय और सुरक्षा के प्रति उनकी प्राथमिकता को प्रकट करते हैं और उनका योगदान आज भी आर्थिक और राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण है। कौटिल्य ने धर्म व न्याय की महत्ता को प्रमोट किया था, जिसका वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्व को नकारा नहीं जा सकता है।

निष्कर्ष :–

कौटिल्य की आर्थिक अवधारणा में राज्य की प्रभुता, संरक्षण एवं सर्वव्यापी हस्तक्षेप की नीति अपनाई गई है। कौटिल्य नीति इस बात पर अधिक जोर देती है कि देश में एक ही सम्प्रभु साम्राज्य हो, उसकी अर्थव्यवस्था सुसंगठित और केन्द्रीकृत हो। कौटिल्य का अर्थशास्त्र ब्रिटिश संस्थापकवादियों स्मिथ एवं रिकार्डो के अनुरूप सदैव उत्पादन के पक्ष पर अधिक और विनिमय पर कम जोर देता है। कौटिल्य के अनुसार किसी भी राष्ट्र के लिए राजनीतिक व सामरिक दृष्टि से शक्तिशाली होना अतिआवश्यक है परन्तु इसके लिए आर्थिक रूप से भी सम्पन्न होना अति आवश्यक है। और उन्होंने आर्थिक व्यवहार के विश्लेषण तथा उससे सम्बन्धित नीति को आदर्शवाद से हटाकर भौतिकवाद की आधारशिला पर रखा जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य से मेल खाती है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में विकसित कल्याणकारी राज्य की रूपरेखा विकसित की थी। वर्तमान में भी प्रत्येक राष्ट्र अपने आपको इसी रूप में विकसित करना चाहता है। कौटिल्यकालीन भारत का आर्थिक, बौद्धिक एवं सामाजिक स्तर जितना उन्नत होगा उतना ही और उससे अधिक वर्तमान युग में प्रत्येक राष्ट्र को अपेक्षित है।

संदर्भ सूची :–

1. जैन डॉ. रेनू (2020) कौटिल्य के आर्थिक विचार–वर्तमान संदर्भ में JETIR February 2020, Volume 7, Issue 2, www.jetir.org, ISSN-2349-51 62)
2. कौटिल्य अर्थशास्त्र, अधिकरण 15 अध्याय–1, श्लोक 3
3. प्राचीन हिन्दू अर्थशास्त्र की रूपरेखा, नवराज चालिये
4. सन्तोष कुमार दास Economic Historty of Ancient India.
5. Singh Priyanka (2003) Kautilya Ke Arthik Vichar UKI : http://hdl. handle.net/10603/301060, shodhganga : a reservoir of Indian thesis @ INFLIBNET